सीखने के संकेतक

(द्वितीय भाषा हिंदी के संदर्भ में)

प्रारूप

राजकीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, पंजाब

सीखने के संकेतक

(द्वितीय भाषा हिंदी के संदर्भ में)

अभिप्रायः – सीखने के संकेतक का अभिप्रायः जानने से पूर्व संकेतक का अर्थ जान लेना अभीष्ट है । संकेतक का शाब्दिक अर्थ है – चिह्न, सूचक अर्थात् जो किसी विशेष कार्य अथवा बात की ओर इंगित करे, उसे संकेतक कहते हैं । इस प्रकार सीखने के संकेतक से अभिप्रायः ऐसे प्रतिमानों, सूचकों से है, जो सीखी गई बात अथवा कार्य की ओर इशारा करे । दूसरे शब्दों में, सीखने के संकेतक शिक्षण–अधिगम (सिखाने–सीखने) प्रणाली एवं सीखने की प्रक्रिया में आई प्रगति के चिह्न रूप हैं ।

वैसे तो सीखना जीवन भर चलने वाली एक सतत प्रक्रिया है । निरक्षर व्यक्ति भी अपने अनुभवों से ऐसा ज्ञानी बन जाता है, जो जगत भर की पोथियाँ पढ़ने वाला नहीं बन पाता, किंतु जहाँ बात औपचारिक शिक्षा पद्धति में शिक्षण–अधिगम प्रणाली की आती है, वहाँ यह आवश्यक हो जाता है कि एक लक्ष्य हमारे समक्ष अवश्य हो, चाहे इस लक्ष्य को पाने की प्रक्रियाएं भिन्न–भिन्न हों । स्कूल स्तर की बात करें तो शिक्षण–अधिगम (सिखाने–सीखने) की प्रक्रिया के केंद्र में छात्र होता है । विषय–वस्तु, अध्यापक केवल मार्ग–दर्शन अथवा सहायक का कार्य करते हैं । जैसा कि पहले भी कहा जा चुका है कि सीखना बालक की स्वाभाविक प्रवृत्ति है । उस प्रवृत्ति को दिशा देना समाज, शिक्षक–वर्ग का कार्य है । इसलिए सीखने के संकेतकों का निर्धारण करते समय निम्न बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है ।

1. संकेतक विद्यार्थियों की आयु, स्तर और आवश्यकता के अनुकूल हों ।
2. संकेतकों का विद्यार्थियों के परिवेश से कोई विरोध न हो ।
3. संकेतक और पाठ्यक्रम आपस में समायोजित हों ।
4. सीखने–सिखाने की प्रक्रिया अथवा माहौल छात्रों की रुचि, मनोविज्ञान एवं आवश्यकता के अनुकूल हों । इसलिए अध्यापक को अपने ढंग से परिस्थिति की मांग के अनुसार सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को आयोजित करने की पूर्ण स्वतंत्रता हो ।

5. संकेतकों के निर्धारण के समय समावेशी कक्षा के माहौल को यकीनी बनाया जाए । समावेशी कक्षा का अर्थ है – सभी तरह के बच्चों को समाविष्ट करना अर्थात् व्यक्तिगत भिन्नताओं को स्वीकार करते हुए शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया चले । समावेशन केवल भिन्न रूप से सक्षम बच्चों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसका अर्थ किसी भी बच्चे का बहिष्कार न होना भी है । सीखने–सिखाने के तरीके और माहौल ऐसे हों कि सभी बच्चे यह महसूस करें कि वे उनका घर, उनका समुदाय, उनकी भाषा और संस्कृति महत्त्वपूर्ण है । उनकी विविध क्षमताओं को मान्यता मिले । यह माना जाए कि सभी बच्चों में सीखने की क्षमता है।

कदाचित् इन बातों को ध्यान में रखकर ही राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) ने निम्न बिंदुओं को साथ लेकर सीखने के संकेतकों की चर्चा की है –

1. पाठ्यक्रम संबंधी अपेक्षाएं
2. परिवेशीय सजगता
3. सीखने के तरीके तथा माहौल

भाषा के संबंध में सीखने के संकेतकों पर बात करने से पूर्व उपर्युक्त तीन बिंदुओं पर विचार कर लेना अपेक्षित है ।

पाठ्यक्रम संबंधी अपेक्षाओं से अभिप्रायः ऐसे पाठ्यक्रम के नियोजन से है, जो छात्रों को अधिगम के एक नियत स्तर को पाने में सहायता कर सके । संकेतक एवं पाठ्यक्रम एक दूसरे से पूर्णतया संबद्ध हैं । वस्तुतः जैसे संकेतक होंगे, वैसा ही पाठ्यक्रम निर्धारित होगा और जैसा पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को दिया जाएगा, वैसा ही वे सीख पाएंगे । इसलिए अभीष्ट संकेतकों का निर्धारण अभीष्ट पाठ्यक्रम की अपेक्षा रखता है । इसी प्रकार छात्रगण कोरा दिमाग लेकर स्कूल नहीं आते । वे अपने परिवेश से बहुत कुछ सीखकर आते हैं । परिवेश का बालक के विकास पर पूरा असर पड़ता है । परिवेशीय सजगता सीखने के संकेतकों को नियत करने में महत्त्वपूर्ण प्रभाव डालती है । इच्छित संकेतकों को पाना तब तक असंभव है, जब तक निर्धारित पाठयक्रम को बच्चों तक पहुँचाने की प्रक्रिया अथवा माहौल सुखद एवं बच्चों के अनुकूल नहीं होगा । ऐसी उच्चकोटि की पाठ्य सामग्री एवं उसके व्याख्याता की क्या उचिचता है, जब तक उसे पढ़ने और ग्रहण करने

की किसी में रुचि ही न हो । इसलिए सीखने की इच्छा पैदा करने के लिए एक ऐसा माहौल तैयार करना आवश्यक है, ऐसी विधियां बनाना आवश्यक है, जो शिक्षार्थी को स्वयं ही पढ़ने–सीखने के लिए उत्साहित कर सके ।

भाषा और सीखने के संकेतक –

भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है । भाषा के द्वारा ही हम कुछ कहते और लिखते है एवं किसी के द्वारा कहे और लिखे को सुनते और पढ़ते हैं। औपचारिक शिक्षा पद्धति में भाषा का सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक शिक्षण बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि भाषा व्यक्ति के आत्मविश्वास और विकास की कुंजी है । यदि हम यह कहें कि भाषा बालक के मूल्य–संस्कार की अहम कड़ी है, तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी । अतः भाषा शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का अहम अंग है । इसके बिना अन्य विषयों के शिक्षण का कोई औचित्य नहीं है।

जब हम शिक्षण–अधिगम स्तर पर भाषा की बात करते हैं, तो हमारी दृष्टि भाषा के चार कौशलों पर आकर स्थिर हो जाती है । भाषा के ये चार कौशल हैं – सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना । भाषा के ये कौशल आपस में जुड़े हुए हैं ।

सुनना–बोलना –

सुनने और बोलने के कौशल में दक्षता से आमतौर पर यही माना जाता रहा है कि बच्चे पढ़े और सुने को ज्यों का त्यों बोल दें, परंतु सुनने और बोलने में 'समझ' की प्रक्रिया को अनदेखा नहीं किया जा सकता । जैसे किसी बात पर प्रतिक्रिया न करने वाले(न सुनने वाले के अर्थ में) को हम यही कहते हैं – 'अरे आप मेरी बात सुन ही नहीं रहे' । स्पष्ट है कि यहाँ समझ के बिना सुनने का और बोलने का कोई मतलब नहीं है । यह समझ ही है, जो सुनने और बोलने को सार्थकता प्रदान करती है । यहाँ यह बात अवश्य है कि जैसे–जैसे बालक बड़ा होता जाता है, उसकी सुनने और बोलने के दौरान समझ शक्ति का विकास होता जाता है और वह सुनने पर अथवा किसी बात को बोलने से पहले चिंतन करने लगता है । भाषा के संकेतकों का निर्धारण हमने इस पक्ष को ध्यान में रखकर किया है ।

पढ़ना –

पढ़ना कौशल में दक्षता का सीधा अर्थ है – दी गई लिखित सामग्री को पढ़ना और उसे पढ़कर समझना । पढ़ना यांत्रिक पठन न होकर एक युक्तिपरक एवं संस्कारित क्रिया है। दी गई सामग्री का मूल भाव, लेखन–शैली, हाव–भाव आदि सबका ध्यान पठन के समय रखना पड़ता है । पढ़ना पढ़कर समझने और उस पर प्रतिक्रिया करने की प्रक्रिया है । दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते है कि पढ़ना बुनियादी तौर से एक अर्थवान गतिविधि है । हम ऐसा भी कह सकते हैं कि मुद्रित अथवा लिखित सामग्री से कुछ संदर्भों व अनुमान के आधार पर अर्थ पकड़ने की कोशिश 'पढ़ना' है । जैसे–जैसे बालक शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया से गुजरता है, वह पढ़ने की इस कला को अर्जित करते हुए प्रवीण होता जाता है ।

लिखना –

पढ़ने के साथ लिखना भाषा शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का सबसे आवश्यक अंग है । सुनना और बोलना तो बालक अपने परिवेश से भी सीख सकता है, किंतु पठन और लेखन कौशल का अर्जन औपचारिक शिक्षा के द्वारा ही संभव है । वर्णों की पहचान–पठन एवं लेखन से लेकर पाठ्य सामग्री एवं अपने विषय को निर्धारित शब्द–सीमा में लिख पाना एक भाषा विद्यार्थी से अपेक्षित है ।

भाषा कौशलों में दक्षता अन्य विषयों के ज्ञानार्जन में भी सहायक है । जगत के समस्त ज्ञान भंडार को ग्रहण करने एवं प्रतिक्रिया स्वरूप अपने मन में उमड़ रहे अनंत विचारों को सशक्त शैली में मौखिक एवं लिखित रूप में अभिव्यक्त करने के योग्य बनना जीवन भर की साधना है और इस साधना से परिचित करवाने वाले संकेतकों की प्राप्ति हमारी स्कूली भाषा–शिक्षण पद्धति का मूल ध्येय होना चाहिए ।

द्वितीय भाषा हिंदी एवं सीखने के संकेतक –

हिंदी केवल हिंदी भाषी राज्यों तक ही सीमित नहीं है। हिंदी भाषा का प्रयोग हिंदी भाषी राज्यों से बाहर भी किया जाता है । संविधान में हिंदी को संपर्क भाषा का दर्जा प्राप्त है । इसका अभिप्रायः यह है कि भारत के भिन्न–भिन्न राज्य चाहे उनकी राजभाषा कोई भी हो, आपसी वार्तालाप एवं पत्राचार के लिए हिंदी का प्रयोग करते हैं । **पंजाब में** भी हिंदी **संपर्क भाषा के रूप में बोली-समझी जाती है । अहिंदी भाषी राज्यों में भारतीय समाज और संस्कृति को जानने, हिंदी भाषा और**

साहित्य का परिचय पाने, व्यापार, खेलकूद, मनोरंजन और विज्ञान की जानकारी के प्रयोजनों से हिंदी के अध्ययन व अध्यापन की आवश्यकता है । इस आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए अहिंदी भाषी राज्यों ने अपनी शिक्षा–पद्धति में राज की मातृ भाषा (प्रथम भाषा के रूप में) के अतिरिक्त अन्य दो भाषाओं हिंदी और अंग्रेजी भाषा को रख कर त्रैभाषी फार्मूले को अपनाया गया है ।

पंजाब में हिंदी के महत्व व हिंदी के समृद्ध साहित्य को ध्यान मे रखते हुए जिन बच्चों की मातृभाषा पंजाबी है, उनके लिए कक्षा-4 से लेकर कक्षा आठ तक हिंदी विषय द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ाया जाता है । द्वितीय भाषा हिंदी सीखने के लिए पहले विद्यार्थियों में हिंदी के प्रति आस्था उत्पन्न करना, इसकी उपयोगिता एवं आवश्यकता बताना आवश्यक है । इस कारण हिंदी शिक्षकों की भूमिका और भी बढ़ जाती है ।

द्वितीय भाषा हिंदी के संकेतक मातृभाषा / प्रथम भाषा हिंदी के संकेतकों से अलग हैं । द्वितीय भाषा हिंदी के रूप में हिंदी सीखने का उद्देश्य हिंदी साहित्य जगत के ज्ञान में प्रवीणता हासिल करना नहीं है । द्वितीय भाषा हिंदी के रूप मे हिंदी शिक्षण–अधिगम का उद्देश्य विद्यार्थी में चारों भाषायी कौशलों - अर्थात सुनना, बोलना, पढ़ना तथा लिखना का विकास करना है ।

मातृभाषा को स्वाभाविक रूप से सीखा जाता है, किन्तु द्वितीय भाषा को सीखने का प्रयास करना पड़ता है । इसके लिए मातृभाषा की सहायता ली जा सकती है । विद्यार्थी ने अपने आस-पास के वातावरण, रेडियो, टेलीविज़न आदि कहीं न कहीं से हिंदी को ज़रूर सुना होता है, किन्तु हिंदी की ध्वनियो/अक्षरों के सही उच्चारण व लिपिबद्ध चिह्नों से वह अपरिचित होता है । इसलिए हिंदी की छोटी-छोटी कविताओं, कहानियों को सुनाकर, रेडियो व टेलीविज़न पर हिंदी के ज्ञानवर्द्धक कार्यक्रमों के ज़रिए तथा हिंदी की घंटी में हिंदी में बात करके हिंदी पढ़ने-पढ़ाने की शुरुआत की जा सकती है । धीरे-धीरे बच्चे हिंदी भाषा की लिपि से परिचित होकर उसे पढ़ने व लिखने की ओर अग्रसर हो जाएंगे । चूँकि बच्चे तीसरी कक्षा तक पंजाबी भाषा का काफी ज्ञान प्राप्त कर चुके होते हैं, अत: भाषा शिक्षण को बहुभाषी संदर्भ में रखकर देखने की आवश्यकता है । कक्षा में बच्चे अलग-अलग भाषायी-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से आते हैं । कक्षा में इनकी भाषाओं का सम्मान किया जाना चाहिए और उनमें बच्चों से सहज अभिव्यक्ति क्षमता का प्रयोग करते हुए हिंदी पढ़ाई जानी चाहिए। शिक्षक बहुभाषिकता की महत्ता को

समझकर कक्षा में उसका उपयोग करें, तभी वह बच्चों को अपने परिवेश की सांस्कृतिक और भाषिक विविधता के प्रति संवेदनशील बना सकता है । आज बहुभाषिकता को बच्चे के व्यक्तित्व के लिए संसाधन के रूप में विकसित करने की आवश्यकता है ।

द्वितीय भाषा हिंदी के सीखने के संकेतकों को कक्षावार दो स्तरों पर तैयार किया गया है । पहला स्तर चौथी और पाँचवी कक्षा का और दूसरा स्तर छठी से आठवीं कक्षा तक के छात्रों के हिंदी भाषा संबंधी सीखने के संकेतकों की बात करता है । संकेतकों के निर्धारण के समय उपर्युक्त दोनों स्तरों के अंतर्गत आने वाले बच्चों की आयु, स्तर, परिवेश, मनोविज्ञान और आवश्यकता को आधार बनाया गया है । इन दोनों स्तरों पर द्वितीय भाषा हिंदी को सीखने–सिखाने की प्रकृति को भी समझ लेना आवश्यक है । सीखने के संकेतक संबंधी हमारी चर्चा इसी प्रकृति पर आधारित है ।

कक्षा पाँच तक –

इस स्तर में छात्र हिंदी की ध्वनियों, मात्रा रहित शब्दों, मात्रा सहित शब्दों तथा पंजाबी और हिंदी में मात्रा-प्रयोग की समानता और असमानता को समझता है । मात्राओं के अलावा दोनों भाषाओं के शब्दों में वर्तनी (spellings) की समानता और असमानता से परिचित होता है । शब्दों से आगे बढ़कर दोनों भाषाओं में छोटे-छोटे मात्रा रहित व मात्रा सहित वाक्यों को लिखने की ओर अग्रसर होता है ।

विद्यार्थी यह समझने लगता है कि पंजाबी भाषा में वह बहुत से ऐसे शब्दों को प्रयोग करता है, जो कि हिंदी में भी प्रयुक्त होते हैं तो उसकी हिंदी पढ़ने की रुचि और बढ़ जाती है । पंजाबी तथा हिंदी में एक समान / लगभग एक समान शब्दों को सुनकर, बोलकर, पढ़कर व लिखकर उसे हिंदी सीखने में आसानी होती है । इसमें पंजाबी से हिंदी में अनुवाद महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है । हिंदी की सीखी ध्वनियों के साथ-साथ वह संयुक्त ध्वनियों को भी सीखकर वर्णों के परस्पर संयोग से नए शब्द बनाना सीख लेता है । चित्र देखकर दिए गए शब्दों की सहायता से रिक्त स्थानों की पूर्ति और छोटे-छोटे वाक्य बनाना सीख लेता है तथा पाठ्य-सामग्री के तहत पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देने लग जाता है ।

कक्षा आठ तक –

छठी कक्षा तक आते–आते छात्रगण हिंदी से परिचित हो जाते हैं । हिंदी की कक्षा का वातावरण एवं अध्यापक का व्यवहार उनमें हिंदी भाषा को सुनने–बोलने, पढ़ने–लिखने की इच्छा को तीव्र करता है । इस स्तर में छात्र अध्यापक की बातों को बड़े ध्यान एवं रुचि से सुनते हैं और अनुकरण करके अथवा स्वतंत्र रूप से अपने विचारों को अभिव्यक्ति देते हैं । बचपन एवं किशोरावस्था के इस संधिकाल में बच्चों में कुछ नया सीखने और कुछ नया करने की पूरी ललक होती है । नए–नए शब्दों का अर्थ जानने, पाठ में आए विविध प्रसंगों के पीछे के रहस्य जानने, स्वयं पाठ को पढ़ने, सुंदर लिखाई में अभ्यास को पूरा करने की उनमें अभूतपूर्व लगन होती है । जहाँ वे पुस्तक में निहित कविता का अनुकरणात्मक ढंग से लयात्मक उच्चारण करते हैं, वहीं गद्य–पाठ के समय वाक्यों–संवादों को पढ़ते समय उनमें निहित भावों के अनुकूल अपनी आवाज में अपेक्षित आरोह–अवरोह लाने का प्रयास करते हैं । हिंदी अध्यापक की भूमिका इस दृष्टि से बहुत बढ़ जाती है । जिस उत्साह से वे हिंदी सीखने की ओर बढ़ते हैं, अध्यापक को भी उसी उत्साह से पाठ्यक्रम को पढ़ाने के लिए ऐसी विधियाँ अथवा प्रक्रिया आयोजित करनी पड़ती हैं, ताकि छात्रों के उत्साह एवं लगन में कोई कमी न आए । पाठ को पढ़ने–पढ़ाते समय, उसकी व्याख्या करते समय, पाठ के अंत में दिए गए अभ्यास को पूरा करवाते समय अर्थात् सीखने–सिखाने के प्रत्येक चरण में अध्यापक को एक पथ–प्रदर्शक का कार्य करना पड़ता है ।

अध्यापक की इसी भूमिका के कारण इस स्तर में छात्रों का हिंदी प्रेम मात्र पाठ्य–पुस्तक तक ही सीमित नहीं रहता, अपितु उसका बाहर भी विस्तार होता है । पाठ्य–पुस्तकों से इतर अन्य पुस्तकों को पढ़ने की प्रवृत्ति का उनमें विकास होता है । बालोपयोगी समाचार पत्र, पत्रिकाओं, पुस्तकों में निहित कविता, कहानी, नाटक, पहेली, चुटकले आदि को वे बड़े चाव से पढ़ते हैं और उन्हें अपने साथियों एवं अध्यापकों को सुनाते हैं । अपने परिवेश में विचरते हुए उन्हें हिंदी से संबंधित सामग्री सुनने–पढ़ने के अवसर मिलते हैं । वे उस पर अपना ध्यान देते हैं और उन पर कक्षा, घर अथवा अपने दोस्तों की टोलियों में विचार भी करते हैं । जहाँ कहीं भी उन्हें हिंदी भाषा का कोई नया शब्द, वाक्यांश, वाक्य अथवा प्रसंग देखने–सुनने को मिलता है, वे उसे नोट कर स्वयं अथवा अपने अध्यापकों से उसका अर्थ–अभिप्रायः जानने का प्रयास करते हैं ।

द्वितीय भाषा हिंदी (कक्षा चार से पाँच तक)

➢ **<u>पाठ्यक्रम संबंधी अपेक्षाएं –</u>**

सुनना और बोलना –

- हिंदी अध्यापक की बातों/निर्देशों को ध्यान से सुनना ।
- हिंदी में कही जाने वाली बातों को ध्यान से सुनना
- छोटी–छोटी कविताओं, कहानियों को आनंदपूर्वक सुनना और कठंस्थ करना ।
- हिंदी ध्वनियों को ध्यानपूर्वक सुनना ।
- मात्रा रहित दो, तीन, चार अक्षरों को जोड़कर बनाए गए शब्दों जैसे – बस, कलम, सड़क, शलगम आदि को सुनना ।
- हिंदी की मात्राओं की ध्वनियों को ध्यानपूर्वक सुनना ।
- पंजाबी तथा हिंदी की मात्राओं एवं शब्दों के उच्चारण में समानता एवं भिन्नता को सुनकर समझना । जैसे – ਮਹਾਰਾਜ – महाराज, ਪੈਸਾ – पैसा में समान उच्चारण तथा ਕੰਮ – काम, ਅੱਗ – आग, ਸੁੱਤਾ – सोया आदि के उच्चारण में भेद ।
- मात्रा सहित शब्दों को सुनना ।
- शब्दों से बने छोटे–छोटे मात्रा रहित वाक्यों को सुनना ।
- पाठ्य सामग्री को ध्यानपूर्वक सुनना ।
- दूसरों की बातों को सुन–समझकर अपने शब्दों में कहने का प्रयास करना ।
- चित्र देखकर उसे अभिव्यक्ति करने की कोशिश करना ।

- छोटी–छोटी कविताओं, कहानियों को हाव–भाव के साथ कहना ।
- हिंदी ध्वनियों को बोलने का अभ्यास करना ।
- मात्रा रहित दो, तीन, चार अक्षरों को जोड़कर बनाए गए शब्दों को बोलना ।
- हिंदी की मात्राओं की ध्वनियों का बोलकर अभ्यास करना ।
- हिंदी तथा पंजाबी की मात्राओं के अंतर को समझते हुए सरल शब्दों को बोलना ।
- मात्रा सहित शब्दों को सुनकर बोलना ।
- छोटे–छोटे वाक्यों को बोलना ।
- पाठ्य–सामग्री को बोलकर सुनाना ।

पढ़ना और लिखना –

- चित्र देखकर अनुमान लगाते हुए पढ़ना ।
- हिंदी ध्वनियों को देख–सुनकर समझना एवं पढ़ना ।
- हिंदी के वर्णों एवं मात्राओं को पढ़ना ।
- हिंदी एवं पंजाबी भाषा में लिखित समान शब्दों के उच्चारण की भिन्नता को समझते हुए पढ़ना ।
- मात्रा–रहित एवं मात्रा–सहित शब्दों एवं शब्दों से बने वाक्यों को पढ़ना ।
- हिंदी भाषा में लिखित एवं मुद्रित सरल सामग्री को पढ़ना ।
- सस्वर वाचन – व्यक्तिगत, सामूहिक अथवा अनुकरण, करने के योग्य बनना ।
- मौन वाचन करने के योग्य बनना ।

- विविध स्रोतों – लाइब्रेरी, वाचनालय, पोस्टर, विज्ञापन, दवाइयों के रैपर, समाचार पत्रों में उपलब्ध बालोपयोगी सामग्री को पढ़ना ।
- हिंदी वर्णों का शुद्ध लेखन ।
- पंजाबी एवं हिंदी के वर्णों की बनावट एवं उनके उच्चारण में समानता एवं भिन्नता को पहचानना । जैसे – ਗ – ग, ਟ - ट, ਠ - ठ, ਰ – र, ਸ – म ਬ – घ ਕ – क, ਮ – म ।
- मात्रा–रहित एवं मात्रा–सहित शब्दों एवं शब्दों से बने सरल वाक्यों को लिखना ।
- पंजाबी एवं हिंदी में लगभग समान उच्चारण वाले शब्दों को लिखकर उनकी बनावट के अंतर को समझना ।
- पढ़ी गई बात को समझकर अपने शब्दों में कहने और लिखने की कोशिश करना ।
- अपनी कल्पना से छोटी–छोटी कविता, कहानी, वार्तालाप को लिखने की कोशिश करना ।
- अपने मन की बात को लिखकर कहने की कोशिश करना ।

➢ **परिवेशीय सजगता –**

- आस–पास की प्रकृति (पेड़–पौधे, मौसम, घरेलू पशु–पक्षी आदि) को देखना एवं अपनी राय बनाना ।
- परिवेश में उपलब्ध धार्मिक स्थलों में चल रहे पूजा–पाठ, साइनबोर्ड, होर्डिंग्स, समाचार पत्रों, रेडियो, टी.वी. चैनलों, दवाइयों के रैपरों आदि के रूप में द्वितीय भाषा सीखने के प्रति उत्सुक होना ।
- घरेलू भाषा एवं हिंदी के बीच संबंध बनाने की कोशिश करना ।
- कक्षीय वातावरण एवं अपने सहपाठियों के प्रति सहजता एवं सामंजस्य होना।
- आस–पास लिखे, देखे, पढ़े हुए नए शब्दों के प्रति जिज्ञासा एवं उत्सुकता का भाव होना ।

➢ **सीखने के तरीके तथा माहौल (सभी बच्चों के समावेश को ध्यान में रखकर) –**

- अपनी भाषा में बातचीत करने की स्वतंत्रता एवं अवसर हों । जैसे समूह में एक दूसरे के बारे में बातें कहना और सुनना ।
- अपनी बात कहने के लिए प्रोत्साहित करना, चाहे वह भाषिक हो अथवा सांकेतिक ।
- अध्यापक को भिन्न–भिन्न शिक्षण–विधियों जैसे अनुवाद विधि, अनुकरण विधि, चित्र विधि, तुलना विधि आदि का प्रयोग करने की स्वतंत्रता हो ।
- पंजाबी एवं हिंदी भाषा की वर्णमाला की समानता एवं भिन्नता को दर्शाते चार्ट, मॉडल आदि की उपलब्धता ।
- वर्णमाला के अक्षरों के प्रतिरूप खिलौनों, चित्रों आदि के रूप में उपलब्ध हों ।
- रंग–बिरंगे चॉक उपलब्ध हों ।
- अपनी भाषा गढ़ने और उनका प्रयोग करने की स्वतंत्रता हो । जैसे – 'खाना' शब्द से मिलते–जुलते दूसरे लयात्मक/तुकांत शब्द ।
- छोटी कहानियाँ, कविताएं अथवा बाल–साहित्य, स्तरानुसार पाठ्य सामग्री, साइनबोर्ड, होर्डिंग, अखबारों की कतरने विद्यार्थियों के आस–पास के परिवेश में उपलब्ध हों एवं उन पर बात करने के अवसर उपलब्ध कराए जाएं ।
- भारतीय त्योहारों, महापुरुषों के जन्म दिवसों, राष्ट्रीय पर्वों अथवा ऐसे ही अन्य विशेष दिनों पर हिंदी में गीत, कविता, भाषण, विचार–अभिव्यक्ति आदि के आयोजन के अवसर हों ।
- शब्द भंडार को विकसित करने वाले पर्यायवाची शब्दों, मिलती–जुलती ध्वनि वाले शब्दों , अनेक शब्दों के लिए एक शब्द को दिखाने वाले सुंदर एवं आकर्षक चार्ट–चित्र आदि उपलब्ध हों ।
- हिंदी में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन के अवसर हों ।
- पाठ्य सामग्री पर अपनी भाषा में बात करने, अपनी राय देने, प्रश्न पूछने की स्वतंत्रता हो ।
- अपना परिवार, स्कूल, मोहल्ला, खेल का मैदान, गाँव की चौपाल जैसे विषयों तथा अपने अनुभवों पर लिखकर एक दूसरे से बाँटने के अवसर हों ।
- अपनी बात को अपने अंदाज में बोल–लिखकर अभिव्यक्त करने की स्वतंत्रता हो ।

- अपनी बात को सृजनात्मक तरीके से अभिव्यक्त करने के अवसर उपलब्ध कराए जाएं ।
- बच्चों द्वारा अपनी वर्तनी गढ़ने अथवा प्रथम भाषा के शब्दों का प्रयोग करने की प्रवृत्ति को भाषा सीखने की प्रक्रिया का अंग समझा जाए ।
- आस–पास होने वाली गतिविधियों/घटने वाली घटनाओं को लेकर बच्चों के मन में उठने वाली जिज्ञासाओं पर बातचीत, प्रश्न–समाधान करने के अवसर उपलब्ध हों ।
- द्वितीय भाषा सीखने–सीखाने का पर्याप्त अवसर और समय शिक्षक–शिक्षार्थी के पास हो।
- कक्षा में अध्यापक एवं अपने साथियों द्वारा बोली गई भाषा को सुनने–समझने का समय उपलब्ध हो ।
- पाठ्य–पुस्तक एवं इससे इतर पठनीय सामग्री में आए प्राकृतिक, सामाजिक एवं अन्य संवेदनशील मुद्दों को समझने और उन पर चर्चा करने के अवसर उपलब्ध हों ।

➢ **सीखने के संकेतक (सभी बच्चों के समावेश को ध्यान में रखकर)**
व्यावहारिक प्रतिक्रियाएं – जो भाषिक एवं सांकेतिक, दोनों हो सकती हैं ।

कक्षा चार	कक्षा पाँच
सुनना और बोलना – • दूसरों द्वारा कही जा रही बात को ध्यान से सुनने में दिलचस्पी दिखाते हैं। जैसे – सिर हिलाकर समझ में आने का संकेत देते हैं । • चित्रों और रचनाओं को देखकर अनुमान लगाते हुए अपनी प्रतिक्रिया देने की कोशिश करते हैं ।	**सुनना और बोलना –** • दूसरों द्वारा कही जा रही बात को रुचि से सुनने में दिलचस्पी दिखाते हैं । प्रश्न समझने की कोशिश करते हैं । • चित्रों और रचनाओं पर अनुमान लगाते हुए अपनी प्रतिक्रिया देने की कोशिश करते हैं ।

• हिंदी में सुनी गई बातों को अपनी भाषा में कहने का प्रयास करते हैं । • छोटी–छोटी कविताओं, कहानियों को आनंदपूर्वक सुनते हैं। अपनी भाषा में कविताओं, कहानियों को कहने की कोशिश करता है । • हिंदी ध्वनियों, मात्राओं को सुनकर बोलते हैं । • पंजाबी तथा हिंदी ध्वनियों की समानता–भिन्नता को सुनकर बोलने की कोशिश करते हैं । • मात्रा रहित, मात्रा सहित शब्दों को बोलने की कोशिश करते हैं । • पंजाबी तथा हिंदी की मात्राओं के अंतर को समझकर बोलने की कोशिश करते हैं । • पंजाबी तथा हिंदी में प्रयुक्त होने वाले समान शब्दों की समानता एवं भिन्नता को समझने की कोशिश करते हैं । • रिक्त स्थानों की पूर्ति द्वारा बोलकर शब्द बनाते हैं । जैसे – क.....म = कलम आदि । • मात्रा रहित वाक्यों को सोचकर धीरे–धीरे बोलते हैं । • मात्रा सहित छोटे–छोटे वाक्यों को सोचकर धीरे–धीरे बोलते हैं । • पाठ्य–सामग्री को सुनकर बोलने की कोशिश करते हैं ।	• हिंदी में सुनी गई बातों को अपनी भाषा में कहते हैं । • छोटी–छोटी कविताओं, कहानियों को आनंदपूर्वक सुनते हैं । अपनी भाषा में कविताओं, कहानियों को सुनाते हैं । • हिंदी ध्वनियों, मात्राओं को सुनकर आत्मविश्वास से बोलते हैं। • पंजाबी तथा हिंदी ध्वनियों की समानता–भिन्नता को सुनकर बोलते हैं । • मात्रा रहित, मात्रा सहित शब्दों को बोलते हैं । • पंजाबी तथा हिंदी की मात्राओं के अंतर को समझकर बोलने में थोड़ा आत्मविश्वास दिखाते हैं । • पंजाबी तथा हिंदी में प्रयुक्त होने वाले समान शब्दों की समानता एवं भिन्नता को समझने की कोशिश करते हैं । • संयुक्त ध्वनियों को सुनकर बोलने की कोशिश करते हैं और व्यंजनों के संयोग से नए शब्द बोलने की कोशिश करते हैं । जैसे – मित्र, विद्यालय, ज्ञानी आदि । • मात्रा रहित वाक्यों को सोचकर बोलते हैं । • मात्रा सहित छोटे–छोटे वाक्यों को सोचकर बोलते हैं । • पाठ्य–सामग्री की कविताओं को कंठस्थ कर बोलते हैं ।

पढ़ना और लिखना –	**पढ़ना और लिखना –**
• हिंदी पढ़ने के प्रति उत्साहित रहते हैं । • चित्रों के आधार पर हिंदी वर्णों को पहचानकर पढ़ते हैं । • मात्रा–रहित शब्दों को जोड़कर पढ़ने की कोशिश करते हैं । • मात्राओं को पहचानकर वर्णों से मिलकर बने शब्दों को धीरे–धीरे पढ़ते हैं । • हिंदी तथा पंजाबी की समान ध्वनियों, मात्राओं को पढ़कर समझने की कोशिश करते हैं । • छोटे–छोटे मात्रा रहित वाक्यों को पढ़ते हैं । • पाठ्य–सामग्री में दिए गए मात्रा सहित वाक्यों को देखकर अनुमान लगाते हुए पढ़ते हैं । • रिक्त स्थानों की पूर्ति करके शब्द–निर्माण करते हैं । जैसे – ई..... = ईख। • पाठ्य सामग्री को पढ़ने की कोशिश करते हैं । • हिंदी लिखने में उत्साह दिखाते हैं । • चित्रो, दी गई रेखाओं/आकृतियों को देख–समझ–पहचानकर वर्णों को लिखने की कोशिश करते हैं ।	• हिंदी पढ़ने के प्रति और अधिक उत्साह और इच्छा प्रकट करते हैं । • संयुक्त ध्वनियों को पहचानकर पढ़ने की कोशिश करते हैं । • मात्रा–रहित शब्दों को जोड़कर पढ़ते हैं । • मात्रा सहित शब्दों को पढ़ने की गति में तेजी दिखाते हैं । • हिंदी तथा पंजाबी की समान ध्वनियों, मात्राओं को पढ़कर समझते हैं । पंजाबी और हिंदी के समान से लगने वाले शब्दों को पढ़कर उच्चारण की समानता–भिन्नता को जानने की समझ उत्पन्न होती है । जैसे – ਮਹਾਰਾਜ – महाराज, ਪੈਸਾ – पैसा में समान उच्चारण तथा ਕੰਮ – काम, ਅੱਗ – आग, ਸੁੱਤਾ – सोया आदि के उच्चारण में भेद । • मात्रा रहित वाक्यों सरलता से पढ़ता/पढ़ती है । • पाठ्य–सामग्री में दिए गए मात्रा सहित वाक्यों को देखकर शुद्ध वाचन करते हैं । • लिंग–वचन बदलो, पाठ में दिए कठिन शब्दों के अर्थ, विलोम शब्दों को ध्यान एवं रुचि से पढ़ते हैं । • पाठ्य सामग्री में आए प्रश्नों के उत्तर देने की कोशिश करते हैं । • हिंदी लिखने में और अधिक उत्साह दिखाते हैं । • वर्णों को लिखने में रुचि दिखाते हैं ।

• मात्रा रहित शब्दों को लिखने की कोशिश करते हैं । मात्राओं को पहचानकर वर्णों से मिलकर बने शब्दों को धीरे–धीरे लिखते हैं । • हिंदी–पंजाबी की समान ध्वनियों, मात्राओं को लिखकर समझने की कोशिश करते हैं । जैसे – ਗ – ग, ਟ - ट, ਠ - ठ आदि ध्वनियाँ और ਿ – ि ੀ – ी ੇ – े ੈ – ै आदि मात्राएं ।	• मात्रा रहित शब्दों को जोड़कर लिख लेते हैं । मात्रा सहित शब्दों को धीरे–धीरे लिख लेते हैं । • हिंदी–पंजाबी की समान ध्वनियों, मात्राओं को को समझने के अतिरिक्त इन भाषाओं की असमान ध्वनियों एवं मात्राओं को लिखकर समझने की कोशिश करते हैं । जैसे – ਰ – र, ਸ – म, ਘ – घ, ਕ – क, ਮ – म, आदि ध्वनियां एवं ੁ – ु ੂ – ू ੋ – ो ੌ – ौ आदि मात्राएं ।
• छोटे–छोटे मात्रा रहित वाक्यों को धीरे–धीरे लिखने की कोशिश करते हैं । • छोटे–छोटे मात्रा सहित वाक्यों को सोचकर लिखने की कोशिश करते हैं । • पाठ्य सामग्री को देखकर लिखते हैं ।	• मात्रा रहित वाक्यों को जोड़कर लिख लेते हैं । • मात्रा सहित वाक्यों को धीरे–धीरे लिख लेते हैं । • पाठ्य सामग्री में आए प्रश्नों के उत्तर लिखने की कोशिश करते हैं ।
परिवेशीय सजगता – • अपनी एवं अपने परिवार की बातों को कहने में दिलचस्पी दिखाते हैं । जैसे – मैने अपना सारा काम कर लिया । • आस–पास की प्रकृति – पेड़–पौधे, मौसम, घरेलू पशु–पक्षी आदि को देखते हैं और प्रश्न करते हैं । जैसे – बादल कैसे बनते हैं । बारिश कैसे होती है।	**परिवेशीय सजगता –** • अपनी एवं अपने परिवार की बातों को कहने में दिलचस्पी दिखाते हैं । जैसे – मैं अपने पापा के साथ बाज़ार गया था । • आस–पास की प्रकृति – पेड़–पौधे, मौसम, घरेलू पशु–पक्षी आदि को देखते हैं और प्रश्न करते हैं । जैसे – तारे दिन में कहाँ चले जाते हैं ।

• अपने परिवेश में घटने वाली घटनाओं के प्रति जिज्ञासा रखते हैं । जैसे – हिंदू और सिख कौन होते हैं ? • हिंदी में सुने शब्दों का अपने परिवेश के शब्दों के साथ संबंध बनाने की कोशिश करते हैं। • आस–पास लिखे, देखे, पढ़े हुए नए शब्दों के प्रति जिज्ञासा एवं उत्सुकता का भाव रखते हैं । जैसे – साक्षरता, समाचार, धन्यवाद आदि ।	• अपने परिवेश में घटने वाली घटनाओं के प्रति जिज्ञासा रखते हैं और उन पर प्रश्न करते हैं । जैसे – गाँव में बिजली क्यों चली जाती है ? • हिंदी में सुनी बात को अपने परिवेश की भाषा के साथ जोड़ने की कोशिश करते हैं। • आस–पास लिखे, देखे, पढ़े हुए नए शब्दों के प्रति जिज्ञासा एवं उत्सुकता का भाव रखते हैं । जैसे – साक्षरता, राष्ट्र, विद्यालय, ज्ञान आदि ।

द्वितीय भाषा हिंदी (कक्षा छह से आठ तक)

➢ **पाठ्यक्रम संबंधी अपेक्षाएं –**

सुनना और बोलना –

- अध्यापक/सहपाठियों द्वारा कही जा रही बातों–प्रश्नों को जिज्ञासापूर्वक सुनना।
- पाठ्य पुस्तक में निहित सामग्री अथवा इससे इतर सामग्री में आए नए–कठिन शब्दों को ध्यानपूर्वक सुनना एवं उसका अर्थ पूछना।

- कविता में निहित लयात्मकता, आरोह–अवरोह, हाव–भाव को ध्यानपूर्वक सुनना।
- अध्यापक द्वारा कक्षा में श्यामपट्ट, चार्ट, फ्लैश कार्ड, कंप्यूटर आदि पर दिखाई जा रही सामग्री से संबंधित बातों को रोचकता से सुनना और पूछने पर अपनी प्रतिक्रिया देना।
- अध्यापक द्वारा शब्द–चित्र निर्मित करते हुए सुनायी जा रही किसी घटना, कहानी को सुनना एवं उसे अपने समक्ष अनुभव करना ।
- कविता–गद्य पाठ में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष बातों–घटनाओं को सुनना ।
- एंकाकी की कथावस्तु, पात्रों के चरित्र–चित्रण, वातावरण आदि को संवादों के माध्यम से ग्रहण करना और उन पर अपनी टिप्पणी देना ।
- कक्षीय वातावरण को रोचक एवं मनोरंजनपूर्ण बनाने हेतु अध्यापक एवं छात्र द्वारा कही जा रही हास्यास्पद बात को पूरी रुचि से सुनना ।
- अध्यापक द्वारा बताए गए व्याकरणिक संदर्भों, नियमों, सिद्धांतों को ग्रहण करना और संदर्भ के अनुसार आए व्याकरणिक रूपों की पहचान करना ।
- अध्यापक द्वारा तर्क–चिंतन, विवेक पर आधारित बातों को अथवा पाठ्य–सामग्री में निहित बातों, घटनाओं को सुनना और तर्क संगत दृष्टिकोण से अपनी प्रतिक्रिया देना ।
- हिन्दी वर्णमाला एवं संयुक्ताक्षरों को आत्मविश्वास से बोलना ।
- कक्षा में सुनी हुई बातों को दोहराना एवं उसमें अपनी बात जोड़ना ।
- अपनी बात को हिंदी में कहना ।
- अध्यापक द्वारा किए प्रश्नों की अपनी समझ के अनुसार अभिव्यक्ति देना ।
- कविता–कहानी में आई किसी बात, घटना पर अपनी प्रतिक्रिया देना ।
- एकांकी पाठ के दौरान सुने गए संवादों को अभिनयात्मक ढंग से बोलने का प्रयास करना ।
- भाषा–ज्ञान में सहायक पर्यायवाची, विलोम, भिन्नार्थक शब्दों, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द, समान तुक वाले शब्दों, पंजाबी–हिंदी शब्दों की समानता–असमानता आदि को ध्यान से सुनना और बोलना ।

- पाठयक्रम से इतर लिखित सामग्री को पढ़कर उसमें निहित बातों–भावों को कक्षा में कहना ।
- प्रसंगानुकूल अपने आस–पास की घटनाओं, समस्याओं पर अपने विचार रखना ।
- चित्र के घटनाक्रम को अपने शब्दों में बयान करना ।

पढ़ना और लिखना –

- पाठ्य–सामग्री को पढ़ने के लिए उत्सुक होना ।
- पाठयक्रम में दी कविता, कहानी का व्यक्तिगत, सामूहिक अथवा अनुकरण वाचन करना और उसके भाव ग्रहण करना ।
- स्तर के अनुसार सस्वर वाचन करने का आत्मविश्वास विकसित करना ।
- मौन वाचन का अभ्यास करना ।
- पाठ्य पुस्तक में निहित सामग्री अथवा इससे इतर सामग्री में आए नए और कठिन शब्दों को ध्यानपूर्वक पढ़ना और उसे लिखने का प्रयास करना ।
- कविता या कहानी पढ़कर उसमें निहित रस–भाव को अनुभव कर सकना ।
- एंकाकी की कथावस्तु, पात्रों के चरित्र–चित्रण, वातावरण आदि को हाव–भाव के अनुरूप पढ़ना ।
- अध्यापक द्वारा श्यामपट्ट, कंप्यूटर आदि पर लिखित निबंध, पत्र को पढ़ना एवं उनके मार्ग–दर्शन से पाठयक्रम में निहित निबन्ध–पत्र लिखने का प्रयास करना।
- अपनी मनपसंद पुस्तको को पुस्तकालय से लेकर पढ़ना ।
- वाचन–कौशल में उत्तरोत्तर सुधार होते जाना ।
- पाठ्य–पुस्तक में निहित व्याकरणिक संदर्भों, नियमों, सिद्धांतों को पढ़ना एवं वाक्यों में उनकी पहचान करना ।
- विषय से संबंधित सामग्री को समाचार पत्र, टी.वी. या अन्य किसी स्रोत से पढ़–देख कर ग्रहण करना ।

- पाठ्य–पुस्तक में पाठ के अंत में दिए गए अभ्यास को लिखना ।
- पंजाबी वाक्यों का हिंदी में अनुवाद करने का प्रयास करना ।
- पाठ्य–पुस्तक में आए नए–कठिन शब्दों की वर्तनी पढ़ना एवं उसे लिखने का प्रयास करना ।
- पाठ्य–पुस्तक में आए कठिन शब्दों, मुहावरों–लोकोक्तियों का वाक्य–प्रयोग पढ़ना एवं उसको लिखने का अभ्यास करना ।
- पाठ्यक्रम में निहित हिन्दी शब्दों की वर्तनी व लेखनी शुद्ध करने का प्रयास करना ।
- पाठ को समझने के पश्चात् उसका सार अपने शब्दों में लिखना ।
- पाठ्यक्रम में निहित विषयों पर निर्धारित शब्दों में निबन्ध एवं पत्र लिखने की कोशिश करना ।
- चित्र के घटनाक्रम को लिखित रूप देना ।
- लेखन–कौशल में उत्तरोत्तर सुधार होते जाना ।

➢ **परिवेशीय सजगता –**

- कक्षीय वातावरण एवं अपने सहपाठियों के प्रति सहजता एवं सामंजस्य होना।
- आस–पास – कक्षा, स्कूल, घर, गाँव, नगर, सड़क, चौराहे, खेल के मैदान आदि में घटित घटनाओं की जानकारी होना ।
- परिवेश में बोली जा रही भाषा की स्तरानुकूल समझ होना ।
- परिवेश में उपलब्ध हिंदी के समाचार पत्र, पत्रिका, धार्मिक स्थान की स्तुतियाँ, टी.वी. चैनल, रेडियो, मोबाइल फोन, साइनबोर्ड, होर्डिंग आदि के माध्यम से द्वितीय भाषा हिंदी की आवश्यकता–उपलब्धता से परिचित होना ।
- यातायात एवं संचार साधनों में नित्य प्रतिदिन आ रहे परिवर्तन के प्रति सजगता ।

- राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, भौमिक परिवेश के प्रति स्तरानुकूल अपेक्षित सजगता ।
- कब, क्यों, कहाँ, कैसे आदि के संबंध में स्वाभाविक जिज्ञासा वृत्ति होना ।
- धार्मिक सद्भाव की भावना तथा भ्रातृभाव होना ।
- राष्ट्रीय स्तर के सुप्रसिद्ध व्यक्तियों, दिवसों की जानकारी होना ।
- प्रकृति से संबंधित उपादानों – वर्षा, बादल, सूर्य, नदी, पौधे, पानी, चिड़िया, चींटी आदि की बात चलने पर अपने अनुभव अभिव्यक्त करना ।
- आस–पास लिखे, देखे, पढ़े हुए नए शब्दों के प्रति जिज्ञासा एवं उत्सुकता का भाव होना ।
- अपने से भिन्न किसी अन्य परिवेश में जाकर वहां की भाषा, संस्कृति को जानने की उत्सुकता होना ।
- अपनी भाषा के प्रति संवेदनशील बने रहना ।

➢ **सीखने के तरीके तथा माहौल – (सभी बच्चों के समावेश को ध्यान में रखकर)**

- अध्यापक एवं छात्रों के बीच मधुर एवं आत्मीय संबंध स्थापित करने वाला माहौल हो । कक्षीय वातावरण पारिवारिक जीवन के समान सहज हो ।
- अध्यापक अपने विषय का पूर्णतः ज्ञाता हो । विषय से संबंधित शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का चुनाव करने, कक्षीय वातावरण में अभिव्यक्त करने में वह पूर्ण समर्थ एवं स्वतंत्र हो।
- अध्यापक एवं अभिभावकों छात्र–छात्राओं को हिंदी में बातचीत करने के लिए उत्साहित करें ।
- छात्रों–छात्राओं को कक्षा, विद्यालय अथवा अपने परिवेश में अपनी बात को हिंदी में कहने का पूर्ण अवसर एवं स्वतंत्रता हो।
- बच्चों को आकर्षित करने के लिए सुंदर श्यामपट्ट, रंग–बिरंगे चॉक, झाड़न, संकेतक हों ।
- स्तरानुसार रोचक बाल–साहित्य, बाल–पत्रिकाएं, अखबार, ऑडियो–वीडियो सामग्री उपलब्ध हो ।
- भावनाओं की अभिव्यक्ति हेतु छोटे–छोटे वाक्य, प्रश्नोत्तर, वार्तालाप, कहानी कविता, चुटकुला आदि कहने और सुनने के अवसर हों ।

- अध्यापक द्वारा दिखाए चित्रों, दृश्य–श्रव्य सामग्री पर अथवा उसके द्वारा कही बातों–संदर्भों पर क्रिया–प्रतिक्रिया करने का सुअवसर हो ।
- अपने हिंदी भाषा ज्ञान से संबंधित मनपसंद विषयों पर विचार चर्चा – छात्र–छात्र, अंतर्कक्षा स्तर पर करवाकर या स्कूल में होने वाली गतिविधियों – प्रार्थना सभा, बाल सभा में राष्ट्रीय स्तर के उत्सव–पर्व, जन्म–दिवस मनाकर अथवा विविध प्रतियोगिताओं के आयोजन भाषण, लेख, अंत्याक्षरी, क्विज़, सूचना–पट्ट पर लिखावट, चार्ट/मॉडल निर्माण, कविता उच्चारण, नाट्य मंचन इत्यादि के अवसर उपलब्ध हों ।
- बाल–स्तर के अनुसार राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, नैतिक, मनोवैज्ञानिक विषयों पर आधारित पुस्तकें पुस्तकालयों में उपलब्ध हों ।
- हिंदी भाषा में पिछड़े बच्चों की शिक्षा के लिए विशेष योजनाएं एवं कार्यक्रम अथवा सामग्री उपलब्ध हों ।
- विविध परिस्थितियों का सृजन करके उसकी हिंदी भाषा में नाटकीय अभिव्यक्ति के अवसर हों ।
- कंप्यूटर अथवा अन्य माध्यमों के द्वारा बच्चों के स्तर के अनुकूल हिंदी कविता, कहानी, नाटक, व्याकरण, अभ्यास आदि उपलब्ध हो ।
- आस–पास घटने वाली घटनाओं पर बातचीत या चर्चा करने के अवसर हों ।
- बच्चों को प्रश्न पूछने का पूरी स्वतंत्रता हो ।
- हिन्दी भाषा में होने वाली सामान्य गलतियों पर छात्रों से चर्चा हो । हिन्दी शब्दों की वर्तनी, उच्चारण एवं लेखनी इत्यादि पर अभ्यास के अवसर हो ।
- भारतीय त्योहारों, महापुरुषों के जन्म दिवसों, राष्ट्रीय पर्वों अथवा ऐसे ही अन्य विशेष दिनों पर हिंदी में गीत, कविता, भाषण, विचार–अभिव्यक्ति आदि के आयोजन के अवसर हों ।
- शब्द भंडार को विकसित करने वाले पर्यायवाची शब्दों, विपरीत शब्दों, मिलती–जुलती ध्वनि वाले शब्दों, लिंग–वचन बदलने, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द आदि को दिखाने वाले सुंदर एवं आकर्षक चार्ट, चित्र, मॉडल आदि कक्षा में उपलब्ध हों ।
- छात्रों को समूह में काम करने के अवसर प्रदान हो ।
- अपनी बात को सृजनात्मक ढंग से अभिव्यक्त करने के अवसर उपलब्ध हों ।
- द्वितीय भाषा सीखने–सिखाने का पर्याप्त अवसर एवं समय शिक्षक–शिक्षार्थी के पास हो।

- कृषि, लोक–कलाओं, हस्त कलाओं, स्थानीय संस्कृति, व्यापार, लघु उद्योगों आदि को देखने एवं इनसे संबंधित भाषिक शब्दावली को जानने एवं उसके उपयोग के अवसर उपलब्ध हों।

➢ **सीखने के संकेतक (सभी बच्चों के समावेश को ध्यान में रखकर)**
व्यावहारिक प्रतिक्रियाएं – जो भाषिक एवं सांकेतिक, दोनों हो सकती हैं ।

छठी	सातवीं	आठवीं
सुनना और बोलना – • अध्यापक द्वारा कही जा रही बात को ध्यान से सुनते हैं और सिर हिलाकर और कभी–कभी एक दो शब्द बोलकर समझ की अभिव्यक्ति देते हैं । • हिंदी के वर्णों, उसकी मात्राओं, संयुक्ताक्षरों को एक दूसरे से सुनकर अथवा स्वयं बोलने का पुनः अभ्यास करते हैं । • मात्राओं के उच्चारण–भेद को समझने का प्रयास करते हैं । जैसे इ 'ि' के दिन, गिर और ई 'ी' के दीन, खीर आदि के उच्चारण में भिन्नता ।	**सुनना और बोलना –** • अध्यापक द्वारा कही जा रही बात को ध्यान से सुनकर अपनी प्रतिक्रिया देते हैं । • हिंदी वर्णों, संयुक्ताक्षरों से निर्मित शब्दों को सुनते और बोलते हैं । • स्वरों की मात्राओं के उच्चरण–भेद को समझकर उनसे नए शब्द बनाने का प्रयास करते हैं ।	**सुनना और बोलना –** • अध्यापक द्वारा कही जा रही बात को ध्यान से सुनकर उस पर अपनी टिप्पणी देते हैं । • हिंदी के संयुक्ताक्षरों के विविध रूपों – क्ष, त्र, ज्ञ, द्य इत्यादि की बनावट को समझने लगते हैं एवं इनसे बनने वाले शब्दों का वाक्य में प्रयोग करते हैं । • मात्रा–भेद के कारण शब्दों के अर्थ–परिवर्तन को समझते हैं और तदानुसार अपनी भाषा में प्रयोग करने का प्रयास करते हैं । जैसे – दिन–दीन, मिल–मील, फुल–फूल, में–मैं, ओर–और आदि ।

• हिंदी और पंजाबी में आए 'र' के रूपों एवं उनकी शब्द में स्थिति को देखकर समझने का प्रयास करते हैं । जैसे – ਧਰਮ–धर्म, ਕਿਰਪਾ–कृपा ਪ੍ਰਕਾਰ–प्रकार आदि ।	• हिंदी और पंजाबी में आए 'र' के रूपों एवं उनकी शब्द में स्थिति को देखकर समझने का प्रयास करते हैं । जैसे – ਧਰਮ–धर्म, ਕਿਰਪਾ–कृपा ਕ੍ਰਮ–क्रम आदि ।	• हिंदी और पंजाबी में आए 'र' के रूपों एवं उनकी शब्द में स्थिति का समझने लगते हैं एवं अपनी भाषा में उनका शुद्ध प्रयोग करने लगते हैं । जैसे – ਧਰਮ–धर्म, ਕਿਰਪਾ–कृपा, ਕ੍ਰਮ–क्रम, ਪ੍ਰਕਾਰ–प्रकार आदि।
• हिंदी भाषा सुनने में रुचि दिखाते हैं और बोलने की इच्छा रखते हैं । हिंदी में सुनी गई बात को अपनी भाषा में आत्मविश्वास से कहते हैं ।	• हिंदी भाषा बोलने में उत्साह दिखाते हैं । सुनी गई बात को मातृभाषा मिश्रित भाषा में कहते हैं ।	• हिंदी में सुनी गई बात को ज्यों का त्यों कहते हैं और उसमें अपनी बात जोड़ने का आत्मविश्वास दिखाते हैं ।
• पाठ्य पुस्तक के पाठों के शीर्षक, कहानी के संबंध में मिली जुली भाषा में बातचीत करने अथवा प्रश्न पूछने का प्रयास करते हैं । यथा – 'सर, 'प्रायश्चित' का क्या मतलब होता है ?' 'सेहत ही सबसे बड़ा धन है ।'	• पाठ्य पुस्तक के पाठों के शीर्षक, कहानी के संबंध में मिली जुली भाषा में बातचीत करने अथवा प्रश्न पूछने का प्रयास करते हैं । यथा – बच्चे रक्तदान क्यों नहीं कर सकते ?	• पाठ्य पुस्तक के पाठों के शीर्षक, कहानी के संबंध में बातचीत अथवा प्रश्न पूछते हैं । यथा – 'गुरु जी, मैट्रो रेल क्या होती है ?' 'हमने भी चिड़िया के अंडे देखे हैं।'
• पाठ्य पुस्तक के पाठों को ध्यान से सुनता है और उनके प्रश्नों को एक दो शब्दों में बोलते हैं।	• पाठ्य पुस्तक के पाठों को रुचि पूर्वक सुनते हुए उनसे संबंधित प्रश्नों का एक दो वाक्यों में उत्तर देते हैं ।	• निर्धारित पाठों को सुनते हैं और उसमें निहित प्रश्नों के आत्मविश्वास से उत्तर देते हैं।
• कविता पाठ में रसास्वादन लेते हुए अध्यापक के पीछे–पीछे बोलते हैं ।	• अध्यापक का आदर्श कविता वाचन सुनकर उसी के अनुरूप बोलने का प्रयास करते हैं ।	• अध्यापक का आदर्श कविता वाचन सुनकर उसी के अनुरूप अथवा कभी–कभी अपनी लय में भी वाचन करते हैं।
• अध्यापक द्वारा बताए गए संज्ञा शब्दों को	• अध्यापक द्वारा बताए गए संज्ञा–भेदों एवं शब्दों	• अध्यापक द्वारा बताए गए संज्ञा–भेदों और वाक्य में

सुनते है और अनुकरण करके बोलते हैं । • कक्षीय वातावरण में अपने सहपाठी की बात सुनते हैं । जैसे – कल मै बहुत बीमार था। मेरी वर्दी मैली है। • कविता में निहित लयात्मकता, आरोह–अवरोह, हाव–भाव को ध्यानपूर्वक सुनते हैं । • एंकाकी की कथावस्तु, पात्रों के चरित्र–चित्रण, वातावरण आदि को संवादों के माध्यम से ग्रहण करते हैं और उन्हें अभिनीत करने का प्रयास करते हैं। जैसे – भाई बैंगन ! तुम भी कुछ कहो। • अध्यापक द्वारा कही गई तर्क–चिंतन, विवेक पर आधारित बातों को अथवा पाठ्य–सामग्री में निहित बातों, घटनाओं को ध्यानपूर्वक सुनते हैं। • पाठ में आए चित्रों को देखकर अपने अनुमान लगाते हैं और पठित विषय समझने का प्रयास करते हैं ।	को सुनकर बोलते हैं और कुछ नए शब्द बोलने का प्रयास करते हैं । • सहपाठी की बात सुनकर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं । जैसे – इतनी गर्मी में जब चाहे वर्दी धो लो, सूख ही जाती है । • कविता में निहित लयात्मकता, आरोह–अवरोह, हाव–भाव को ध्यानपूर्वक सुनते हैं और उसका अनुकरण करने की कोशिश करते हैं। • एंकाकी की कथावस्तु, पात्रों के चरित्र–चित्रण, वातावरण आदि को संवादों के माध्यम से ग्रहण करते हुए उन पर अपनी टिप्पणी देते हैं । • अध्यापक द्वारा कही गई तर्क–चिंतन, विवेक पर आधारित बातों को अथवा पाठ्य–सामग्री में निहित बातों, घटनाओं को रुचि लेकर सुनते हैं एवं उस पर अपनी शंकाओं को रखते हैं । • पाठ में छपी तस्वीरों को देखकर अपनी राय देने का प्रयास करते हैं।	प्रयुक्त संज्ञा–शब्दों को सुनकर उनकी पहचान करते हैं। • दूसरों की बातों को धैर्य से सुनते हैं, उसमें विवेक से अपनी बात को जोड़कर बताने की कोशिश करते हैं। • कविता में निहित लयात्मकता, आरोह–अवरोह, हाव–भाव को ध्यानपूर्वक सुनते और उसी अनुसार बोलने का प्रयास करते हैं। • एंकाकी की कथावस्तु, पात्रों के चरित्र–चित्रण, वातावरण आदि को संवादों के माध्यम से ग्रहण करते हैं और उन पर अपनी टिप्पणी–प्रतिक्रिया देते हैं । जैसे – 'मेरा दम घुटता है' के संदर्भ में छात्र कहता है कि प्रदूषण का सबसे अधिक जिम्मेवार मानव ही है। • अध्यापक द्वारा कही गई तर्क–चिंतन, विवेक पर आधारित बातों को अथवा पाठ्य–सामग्री में निहित बातों, घटनाओं को सुनते हैं और तर्क संगत दृष्टिकोण से अपनी प्रतिक्रिया देते हैं। • छपी तस्वीरों को देखकर स्वयं घटना गढ़ने का प्रयास

• पाठ्यक्रम में निहित व्याकरणिक संदर्भों, नियमों, सिद्धांतों को अध्यापक के मार्ग दर्शन से ग्रहण करते हैं और संदर्भ के अनुसार आए व्याकरणिक रूपों की पहचान करते हैं । यथा – 'मेहनत, पाठशाला, गोपू' शब्दों में से वह व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्द की पहचान कर लेते हैं।	• पाठ्यक्रम में निहित व्याकरणिक संदर्भों, नियमों, सिद्धांतों को अध्यापक के मार्ग दर्शन से ग्रहण करते हैं और संदर्भ के अनुसार आए व्याकरणिक रूपों की पहचान करते हैं । यथा – दी गई संज्ञाओं में से तीनों संज्ञा–भेदों की पहचान कर लेते हैं ।	करते हैं। • पाठ्यक्रम में निहित व्याकरणिक संदर्भों, नियमों, सिद्धांतों को अध्यापक के मार्ग दर्शन से ग्रहण करते हैं और संदर्भ के अनुसार आए व्याकरणिक रूपों की पहचान करते हैं । यथा – विशेषण के चारों भेदों के उदाहरण बोल सकते हैं ।
• पाठ्यक्रम में निहित निबंध, कहानी अथवा प्रार्थना–पत्र को अध्यापक के मुख से सुनकर अपने शब्दों में कहने का प्रयास करते हैं । जैसे – 'मेरा मित्र' लेख एवं 'प्यासा कौआ' कहानी के बारे में कहना ।	• पाठ्यक्रम में निहित निबंध, कहानी अथवा पत्र को अध्यापक के मुख से सुनकर अपने शब्दों में कहने का प्रयास करते हैं । जैसे – 'मेरा अध्यापक' लेख एवं 'खरगोश और कछुआ' कहानी कहना आदि ।	• पाठ्यक्रम में निहित निबंध, कहानी अथवा पत्र को अध्यापक के मुख से सुनकर अपने शब्दों में कहने का प्रयास करते हैं । जैसे – 'रक्षा–बंधन' लेख एवं 'परीक्षा में प्रथम आने पर बधाई पत्र' कहना आदि ।
पढ़ना और लिखना – • हिंदी भाषा पढ़ने एवं लिखने के प्रति रुचि दिखाते हैं। • हिंदी के वर्णों, मात्राओं, संयुक्ताक्षरों को पुस्तक से पढ़ते हैं और उन्हें स्वयं लिखने का पुनः अभ्यास करते हैं ।	**पढ़ना और लिखना –** • हिंदी भाषा पढ़ने–लिखने के लिए उत्साह एवं लगन दिखाते हैं। • हिंदी के संयुक्ताक्षरों – क्ष, त्र, ज्ञ ,द्ध, द्य, श्र आदि की बनावट को समझने लगते हैं और उनका प्रसंगानुसार शद्ध रूप लिखते हैं।	**पढ़ना और लिखना –** • हिंदी भाषा के शुद्ध वाचन–लेखन के लिए यत्नशील रहते हैं। • हिंदी के संयुक्ताक्षरों – क्ष, त्र, ज्ञ ,द्ध, द्य, श्र आदि की बनावट को समझने लगते हैं और उनका प्रसंगानुसार शद्ध रूप लिखते हैं।

• मात्राओं के कारण आई उच्चारण–भिन्नता को ध्यान देकर पढ़ते हैं ।	• मात्राओं के कारण आई उच्चारण–भिन्नता को ध्यान देकर पढ़ते हैं और इस कारण आए अर्थ–भेद के प्रति सचेत होते हैं।	• मात्राओं के कारण आई उच्चारण–भिन्नता को ध्यान देकर पढ़ते हैं और शब्दों के अर्थ–भेद को समझकर उन्हें अपनी भाषा में प्रयोग करते हैं।
• हिंदी में आए 'र' के विविध रूपों – कृपा, कर्म, क्रम को ध्यान देकर पढ़ते हैं।	• हिंदी में आए 'र' के विविध रूपों – कृपा, कर्म, क्रम को ध्यान देकर पढ़ते हैं और इनके मूल स्वरूप को समझने की कोशिश करते हैं।	• भाषा में 'र' के विविध रूपों के प्रयोग को समझने लगते हैं और उसी के अनुसार अपनी भाषा में प्रयोग करते हैं ।
• अध्यापक द्वारा किए गए पुस्तक की कविताओं के आदर्श वाचन का यथावत अनुकरण करते हैं।	• पुस्तक की कविताओं का अनुकरण एवं स्वतंत्र वाचन दोनों करते हैं।	• पुस्तक की कविताओं का पूर्ण हाव–भाव, लय, विराम के साथ वाचन करने का भरसक प्रयास करते हैं ।
• पुस्तक के गद्य पाठ – कहानी, लेख, एकांकी के शब्दों को जोड़–जोड़कर पढ़ते हैं।	• पुस्तक के गद्य पाठ – कहानी, लेख, एकांकी को लय के साथ पढ़ने का अभ्यास करते हैं।	• पुस्तक के गद्य पाठ – कहानी, लेख, एकांकी को प्रभावी ढंग से पढ़ते हैं।
• पाठ के अभ्यास में दिए गए रिक्त–स्थान की पूर्ति, सरल प्रश्नों के उत्तर पाठ में से खोजकर कर लेते हैं।	• पाठ के अभ्यास में दिए गए प्रश्न–उत्तर, रिक्त–स्थान, मुहावरों–लोकोक्तियों, अशुद्ध–शुद्ध की पाठ में से स्वयं खोज करके अपने भाषा–ज्ञान का प्रदर्शन करते हैं।	• पाठ के अभ्यास में दिए गए प्रश्न–उत्तर, रिक्त–स्थान, मुहावरों–लोकोक्तियों, अशुद्ध–शुद्ध स्वयं करके अपने भाषा–ज्ञान का प्रदर्शन करते हैं।
• व्याकरण संबंधी विविध विषय जैसे एक वचन से बहुवचन, लिंग बदलो, विपरीत शब्द आदि स्वयं लिखने का प्रयास करते हैं ।	• व्याकरण संबंधी विविध विषय जैसे एक वचन से बहुवचन, लिंग बदलो, विपरीत शब्द, भाववाचक संज्ञा निर्माण, समानार्थक शब्दों को समझकर उसमें निर्दिष्ट परिवर्तन कर पाने की कोशिश करते हैं।	• पाठ के अभ्यास में दिए गए विविध व्याकरणिक संदर्भों के उदाहरण देखकर स्वयं उनके नियमों को समझने की कोशिश करते हैं और मिलते–जुलते शब्दों का निर्माण करने में रुचि दिखाते हैं।
• पंजाबी भाषा से भिन्न मात्राओं, वर्णों और शब्दों को सीखकर लिखने में उत्साहित होते हैं। जैसे	• पंजाबी भाषा के शब्दों के हिंदी–रूप जानने में रुचि	• पंजाबी–हिंदी के व्याकरणिक अंतर को समझने लगते हैं तथा उसी के अनुरूप शब्दों को पढ़–लिख लेते हैं।

– ਕੱਚਾ–कच्चा, ਫੁੱਲ–फूल, ਸ਼੍ਰੀ–श्री आदि । • भाषा की बारीकियों के प्रति ध्यान आकर्षित करते हैं। • अध्यापक के सहयोग से किसी एक विषय पर निबंध रचना करते समय मिलते–जुलते विषयों पर स्वयं पंक्तियां लिख लेते हैं। जैसे – 'मेरी गाय' निबंध के साथ–साथ मेरा कुत्ता अथवा अन्य कोई पालतू पशु–पक्षी पर लिखना। • अध्यापक द्वारा श्यामपट्ट पर लिखे प्रार्थना–पत्र का अनुकरण लेखन करते हैं। मिलते–जुलते विषय पर स्वयं पत्र लिख लेते है। जैसे – जरुरी काम अथवा बीमारी की छुट्टी का पत्र। **परिवेशीय सजगता –** • समाचार पत्र, बाल पत्रिकाओं में छपी कविताओं, चुटकलों, पहेलियों को बड़े चाव से पढ़ते हैं ।	दिखाते हैं और उन्हें लिखने का प्रयास करते हैं। जैसे –ਨਿੰਮ–नीम, ਟਾਹਲੀ–शीशम, ਹੁਣ–अब आदि । • भाषा की बारीकियों को समझने की कोशिश करते हैं। • विद्यालय अथवा अपने आस–पास घटी घटनाओं पर खुद वाक्य रचना करने का प्रयास करते हैं । जैसे – आँखों देखा मैच, मेरी कक्षा का कमरा, दीपावली आदि । • प्रार्थना पत्र के साथ मित्र, रिश्तेदार को पत्र लिखने योग्य हो जाते हैं। इस तरह औपचारिक एवं अनौपचारिक पत्रों में भेद करने लगते हैं। पत्रों में अपने निजि विचारों का समावेश करते हैं । **परिवेशीय सजगता –** • समाचार पत्र, बाल पत्रिकाओं में छपी कविताओं, चुटकलों, पहेलियों को यादकर अपनी मिश्रित भाषा	जैसे – ਪੀਲੀਆਂ ਕਲਮਾਂ – पीली कलमें, ਤੁਹਾਡੀਆਂ ਪੁਸਤਕਾਂ – आपकी पुस्तकें आदि। • भाषा की बारीकियों को समझने लगते हैं एवं सही शब्दों का चुनाव करने लगते हैं । • विद्यालय अथवा अपने आस–पास घटी घटनाओं पर खुद वाक्य रचना करने का प्रयास करते हैं । दिए गए विषय पर अपने मौलिक विचार रख सकते हैं। जैसे – रक्षा बंधन, प्रातः काल की सैर । • पत्र लेखन में बंधी–बंधाई भाषा का प्रयोग न करके अपने मौलिक विचारों को प्राथमिकता देते हैं । जैसे – 'स्कूल में पीने के पानी का उचित प्रबंध करने के लिए पत्र' में प्रयुक्त शब्द उनके अपने होते हैं । **परिवेशीय सजगता –** • समाचार पत्र, बाल पत्रिकाओं में छपी कविताओं, चुटकलों, पहेलियों आदि को उत्साह से पढ़ते हैं एवं

• अपने आस–पास की परिस्थितियों को अभिव्यक्त करते हैं। जैसे – मेरे पापा अनपढ़ हैं, वे अगूंठा लगाते हैं । • प्रकृति से संबंधित उपादानों – वर्षा, बादल, सूर्य, नदी, पौधे, पानी, चिड़िया, चींटी आदि की बात चलने पर अपने अनुभव अभिव्यक्त करते हैं । • आस–पास – कक्षा, स्कूल, घर, गाँव, नगर, सड़क, चौराहे, खेल के मैदान आदि के क्रिया–कलापों को सुनाने में दिलचस्पी दिखाते हैं । जैसे – आज मनदीप खेलते–खेलते गिर पड़ा । • पर्यावरण–सुरक्षा से जुड़े पाठों को पढ़कर अपने घर, आस–पड़ोस के प्रति सचेत होते हैं । जैसे – 'पेड़ लगाओ' कविता से प्रेरित हो, पेड़–पौधे लगाना अथवा उनको पानी देना । • अन्य धर्मों और जातियों के प्रति आदर–प्रेम का	में सुनाते हैं । • अपने आस–पास की परिस्थितियों को अभिव्यक्त करने के साथ–साथ उस पर अपनी प्रतिक्रिया देते हैं। जैसे – हमारे घर के आस–पास बहुत गंदगी है, इसलिए मच्छर ज्यादा हैं । • प्रकृति से संबंधित उपादानों – वर्षा, बादल, सूर्य, नदी, पौधे, पानी, चिड़िया, चींटी आदि की बात चलने पर अपने अनुभव अभिव्यक्त करता है। • आस–पास – कक्षा, स्कूल, घर, गाँव, नगर, सड़क, चौराहे, खेल के मैदान आदि के क्रिया–कलापों को सुनाने में दिलचस्पी दिखाते हैं। जैसे – हमारे स्कूल में बाल–दिवस मनाया जा रहा है । • पाठ्य पुस्तक के पाठों को पढ़–समझकर समाज के प्रति अपने नैतिक दायित्व का पालन करते हैं। जैसे – 'सड़क सुरक्षा' पाठ से अनुशासन की भावना पैदा होना । 'हार की जीत' से परोपकार की भावना दिखाना । • विविध धर्मों और जातियों के प्रति सद्भाव रखते	स्वयं भी कविता, चुटकला, कहानी कहने में रुचि दिखाते हैं । • अपने आस–पास की परिस्थितियों पर अपनी प्रतिक्रिया देते हैं। जैसे – नशा सेहत को नुकसान पहुँचाता है, फिर भी लोग नशा क्यों करते हैं ? • प्रकृति से संबंधित उपादानों – वर्षा, बादल, सूर्य, नदी, पौधे, पानी, चिड़िया, चींटी आदि की बात चलने पर वातावरण की सुरक्षा की भी बात करते हैं। • आस–पास – कक्षा, स्कूल, घर, गाँव, नगर, सड़क, चौराहे, खेल के मैदान आदि के क्रिया–कलापों को सुनाने में रुचि दिखाते हैं। जैसे – आज बाज़ार में दो व्यक्ति आपस में लड़ पड़े । • पाठ्य पुस्तक के पाठों में निहित भावों को ग्रहण करते हुए उसे जीवन में उतारने का प्रयास करते हैं । जैसे – 'मन के जीते जीत' से वे आत्म–विश्वास, साहस और दृढ़–निश्चय आदि गुण सीखते हैं । • विविध धर्मों और जातियों के प्रति सद्भाव रखते हुए उनके रीति–रिवाजों, त्योहारों आदि के प्रति जिज्ञासा

भाव रखते हैं और मिल–जुलकर त्योहार मनाते हैं । • घर में बोली जा रही भाषा का सीखी जा रही हिंदी भाषा के साथ तालमेल बिठाते हैं । • घर, कक्षा, स्कूल, एवं आस–पास होने वाले चीज़ों के दुरुपयोग को रोकते हैं । जैसे – पानी खुला छोड़ने पर अपने साथी की शिकायत लगाते हैं । • राष्ट्रीय स्तर के सुप्रसिद्ध व्यक्तियों, दिवसों, पर्वों के बारे में प्रश्न करता है ।	हुए उनके त्योहारों के बारे में जिज्ञासा व्यक्त करते हैं । • अपने परिवेश में उपलब्ध हिंदी भाषा को उत्साह से सुनते और पढ़ते हैं । चर्चित हिंदी फिल्मों के संवाद, गीतों को उत्साह से बोलते–लिखते हैं । • घर, कक्षा, स्कूल, एवं आस–पास होने वाले चीज़ों के दुरुपयोग को रोकते हैं । जैसे – पानी खुला छोड़ने पर अपने साथी की शिकायत लगाते हैं । • राष्ट्रीय स्तर के सुप्रसिद्ध व्यक्तियों, दिवसों, पर्वों के बारे में प्रश्न करते हैं ।	रखते हैं और उनके संबंध में प्रश्न करते हैं । • अपने परिवेश में उपलब्ध हिंदी भाषा को उत्साह से सुनते और पढ़ते हैं । चर्चित हिंदी फिल्मों के संवाद, गीतों को उत्साह से बोलते–लिखते हैं । • घर, कक्षा, स्कूल, एवं आस–पास होने वाले चीज़ों के दुरुपयोग को रोकते हैं । जैसे – खाली कमरे में चल रहे पंखों, बल्बों को बंद करते हैं । कचरे को उठाकर कूड़ादान में डालते हैं । • राष्ट्रीय स्तर के सुप्रसिद्ध व्यक्तियों, दिवसों, पर्वों के बारे में प्रश्न करता है और स्वयं भी जानकारी इकट्ठी करते हैं ।